विश्व हिन्दी दिवस: सेंट्रल यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग का आयोजन

वैसे तो हिंदी का समूचा वर्तमान साहित्य ही प्रवासी लेखन है-तेजेंद्र

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बिलासपुर. विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित हिंदी विभाग, गुरु घासीदास की संगोष्ठी में बोलते हुए "कथा यू के" के संस्थापक और हिंदी के वरिष्ठ कथाकार तेजेन्द्र शर्मा ने हिंदी में प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर खेद जताते हुए कहा कि आज के साहित्य, विशेषकर कविता में गांव को लेकर जो नास्टेल्जिया (पुरानी यादें) दिखाई देता है, उसका कारण ही है कि आज का कवि या कोई लेखक, कथाकार अपनी उन जड़ों को खो चुका है जहां उसका बचपन बीता है, जहां से उसके जीवन अनुभव और स्मृतियों का एक भरा पूरा संसार समृद्ध हुआ है। आज का लेखक उसे पीछे छोड़ आया है। दूरस्थ बिहार, छत्तीसगढ़, या पंजाब का कोई लेखक जब दिल्ली में रहकर अपने गांव की कहानी लिखता है तो वह भी किसी न किसी स्तर पर प्रवासी ही होता है। लगभग

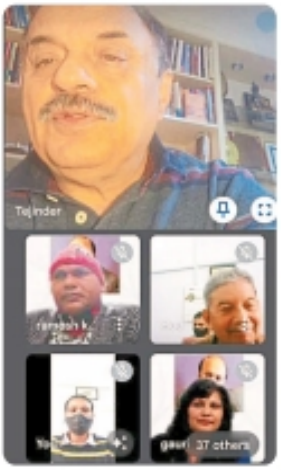

आधा घंटे के अपने सम्मोहक व्याख्यान में कथाकार तेजेन्द्र शर्मा ने लंदन में फैलते जा रहे हिन्दी कथा साहित्य की लोकप्रियता का हवाला देते हुए बताया कि 1998 तक वहां के किसी लेखक के पास अपनी कहानियों का एक संग्रह तक नहीं था, जबकि विगत बीस वर्षों में आज कोई ऐसा लेखक लंदन में नहीं है जिसके दो- तीन कथा संग्रह न प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पीछे "कथा यू के" की साहित्यिक गोष्ठियां, उसके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श या आदिवासी विमर्श जैसे बंटवारे साहित्य के प्रभाव को सीमित कर रहे हैं। आज के लेखक को चाहिए कि साहित्य के बाजार में उछाले जा रहे इन कृत्रिम मुद्दों के बरक्स अपने जीवन अनुभव से साहित्य के विषय उठायें। अपने प्रिय लेखक जगदम्बा प्रसाद दीक्षित को उद्धृत करते हुए तेजेन्द्र शर्मा ने बताया कि उनकी कहानियों के छोटे-छोटे वाक्य आज की हिन्दी को जिस तरह प्राणवान और संप्रेषणीय बना रहे हैं, वे मेरे लेखन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। कला विद्यापीठ के छात्रों और अन्य विभाग के अध्यापकों की भारी उपस्थिति में संगोष्ठी का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर देवेंद्र नाथ सिंह व धन्यवाद ज्ञापन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर मुरली मनोहर सिंह ने किया।

परिचर्चा के साथ बैंकिंग, अन्य संस्थान ने भी लिया भाग

विश्व हिंदी दिवस पर जोनल रेल कार्यालय में वर्तमान में हिंदी का स्वरूप पर विस्तार से परिचर्चा का आयोजन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर किया गया। परिचर्चा में रेल कार्यालय से जोनल रेल मुख्यालय के साथ ही मंडलों व कारखानों के नोडल राजभाषा अधिकारियों व राजभाषा विभाग ने भाग लिया। परिचर्चा में एनटीपीसी, रेशम कीट बीज संगठन, पंजाब एंड सिंध बैंक, केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, यूनियन बैंक ऑफइंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, बिलासपुर शहर के विभिन्न निगमों व उपक्रमों ने भाग लिया। कर्मचारियों ने कहा कि हिन्दी का प्रयोग पहुंत ही आसान है इसे लेकर शब्दों के चयन में पहले की अपेक्षा काफी आसान हुई है।

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विशेष ऑनलाइन व्याख्यान

समय : 12.30 बजे दोपहर, दिनांक : 11/01/2022

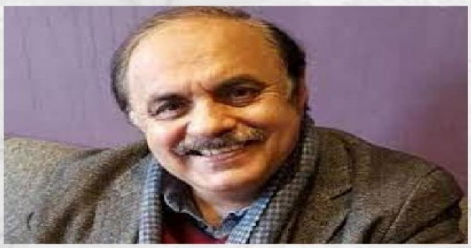

वक्ता

तेजेन्द्र शर्मा

प्रख्यात प्रवासी साहित्यकार, लंदन

आयोजक

हिंदी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

जुडने के लिए लिंक - https://meet.google.com/vhk-zhyn-uyk

कथा यूनाइटेड किंगडम के संस्थापक ने प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर रखे विचार

अनुभव और स्मृतियों का संसार पीछे छोड़ आए हैं आज के लेखक: शर्मा

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क

lokswar.in

बिलासपुर। आज के साहित्य, विशेषकर कविता में गांव को लेकर जो नास्टेल्जिया दिखाई देता है। उसका कारण ही है कि आज का कवि या कोई लेखक, कथाकार अपनी उन जड़ों को खो चुका है, जहां उसका बचपन बीता है, जहां से उसके जीवन का अनुभव और स्मृतियों का एक भरा-पूरा संसार समृद्ध हुआ है। लेखक उसे पीछे छोड़ आया है।

ये बातें विश्व हिंदी दिवस पर गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में लंदन की साहित्यिक संस्था कथा यूनाइटेड किंगडम के संस्थापक और हिंदी के वरिष्ठ कथाकार तेजेंद्र शर्मा ने हिंदी में प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर खेद जताते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि दूरस्थ बिहार, छत्तीसगढ़ या पंजाब का कोई लेखक जब दिल्ली में रहकर अपने गांव की कहानी लिखता है तो वह भी किसी न किसी स्तर पर प्रवासी ही होता है।

कथाकार शर्मा ने लंदन में फैलते जा रहे हिंदी कथा साहित्य की लोकप्रियता का हवाला देते हुए बताया कि 1998 तक वहां के किसी लेखक के पास अपनी कहानियों का एक संग्रह तक नहीं था, जबकि विगत बीस वर्षों में आज कोई ऐसा लेखक लंदन में नहीं है, जिसके दो- तीन कथा संग्रह न प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पीछे 'कथा यू के' की साहित्यिक गोष्ठियां, उनके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं।

अनुभव से उठाएं साहित्य के विषय

शर्मा ने कहा कि साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श या आदिवासी विमर्श जैसे बंटवारे साहित्य के प्रभाव को सीमित कर रहे हैं। आज के लेखक को चाहिए कि साहित्य के बाजार में उछाले जा रहे इन कृत्रिम मुद्दों के बरक्स अपने जीवन अनुभव से साहित्य के विषय उठाए। इसके बाद उन्होंने अपने लेखन के प्रेरणा स्रोत जगदंबा प्रसाद दीक्षित का स्मरण करते हुए उनके योगदान को बताया। कला विद्यापीठ के छात्रों और अन्य विभाग के अध्यापकों की उपस्थिति में संगोष्ठी का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. देवेंद्र नाथ सिंह व धन्यवाद ज्ञापन विभाग के असिस्टेंट प्रो. मुरली मनोहर सिंह ने किया।